संक्षिप्त रूप और प्रतीक चिह्न

लिंग	
पुरुष	M
स्त्री	F
भाषा	
हिंदी	H
ओड़िया	O
गुजराती	G
मारवाड़ी	M
सिंधी	S
भोजपुरी	B
छत्तीसगढ़ी	C
प्रतीक चिह्न	
प्रतिशत	%
से अधिक	+
वाक्य निर्माण में त्रुटि	----------
शब्दों में पीले रंग का प्रयोग त्रुटियों को दर्शाने के लिए किया गया है।	मे

अध्याय-1

भाषा में त्रुटियाँ, ओड़िशा और झारसुगुड़ा का परिचय, भाषाई स्थिति और शिक्षण प्रणाली

1.1. भाषा में त्रुटियाँ क्यों होती हैं?

त्रुटियों के होने के प्रमुख कारण इस प्रकार है-

"प्रत्येक अन्य भाषा के प्रयोक्ता का मस्तिष्क अपनी मातृभाषा के व्याकरण एवं कोश द्वारा इतना नियंत्रित होता है कि वह अन्य भाषा का व्यवहार अन्य भाषा की प्रकृति के अनुसार करना चाहकर भी नहीं कर पाता और उसके अन्य भाषा के व्यवहार में मातृभाषा की आदतें मुखर हो उठती हैं (स्वीट-1899.1981) इससे अन्य भाषा के 'व्याकरण' एवं 'कोश' का अतिक्रमण के परिणाम स्वरूप अन्य भाषा में एक ओर तो कुछ नये नियम आ जाते हैं, दूसरी ओर अस्वीकार्य नियमों की धारणा भी वलवती हो उठती है। ये अस्वीकार्य नियम 'त्रुटि' कहलाते हैं।"[1]

उदाहरण-

लड़का जाता है।

लड़की (जाता) है।

हिंदी में स्वीकार नहीं किया जाता है इन्हें 'त्रुटि' माना जाता है।

भाषा में स्वीकृत नियमों की सीमा के अतिरिक्त जो 'अस्वीकृत नियम' उपलब्ध होते हैं वे 'त्रुटियाँ' हैं। ये त्रुटियाँ भाषा के मानकीकरण में बाधक होती हैं, अत: ये 'अवांछित' होती हैं।[2]

"भाषाई व्यवहार के संदर्भ में अशुद्धियाँ होती ही हैं। इन अशुद्धियों के मूल में 'प्रयोक्ता की भाषा' और 'संपूर्ण भाषा' (तुलना करें- कार्डर 1973:37) के बीच का अंतर होता है।"[3]

इन त्रुटियों की खोज हम ओड़िशा के झारसुगुड़ा शहर के विद्यालयों में सिखाई जाने वाली हिंदी भाषा के, भाषा शिक्षण में होने वाली अशुद्धियों में आगे अध्याय दो और तीन में देखेंगे।

1.2. हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश

"भारत के संविधान के अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश–

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना

[1] त्रुटि विश्लेषण (सिध्दांत और व्यवहार) , राम कमल पाण्डेय,1985. केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा-p-3,f, 4th लाइन

[2] त्रुटि विश्लेषण (सिध्दांत और व्यवहार) , राम कमल पाण्डेय,1985. केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा-p-3,m1

[3] वही पुस्तक- p-3,m2

हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप-शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्ध सुनिश्चित करे।"[1]

भारत सरकार के 'मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय' (MHRD) की ओर से हिंदी को बढ़ावा देने का काम 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय'(उच्चतर शिक्षा विभाग) के द्वारा किया जाता है। विस्तार कार्यक्रम के तहत हिंदीतर भाषी प्रांतों में प्रचार-प्रसार से संबंधित होते हैं जिसके अंतर्गत हिंदीतर भाषी क्षेत्रों के हिंदी नव लेखकों के लिए कार्यशाला, विद्यार्थियों के लिए अध्ययन यात्रा, प्रोफेसर व्याख्यान माला, राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की जाती है।

1.3. अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व को देखते हुए भाषा सीखने की होड़ सी लगी है। आधुनिकता के दौर में विदेशों से विद्यार्थी भारत हिंदी सीखने आते हैं। और उनका आँकड़ा दिनों दिन बढ़ रहा है।

भारत के बाहर 10 देशों में हिंदी बोली और समझी जाती है ये देश हैं- सिंगापुर, नेपाल, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, मॉरिशस, सुरिनाम, गयाना, ट्रिनिडाड-टुबैगो, होलैंड और फिजी । इनके अलावा भारतीय मूल के निवासियों द्वारा अमेरिका और कनाडा में भी हिंदी बोली और समझी जाती है।

वहीं भारत के अंदर ही कुछ राज्य हिंदी भाषा सीखने में पीछे होते जा रहे है। इसका एक कारण हिंदीतर क्षेत्रों में अध्ययन में आ रही कठिनाइयों के व्यवस्थित अध्ययन का अभाव भी है।

1.4. सुधार की आवश्यकता

"यह बड़े दुःख की बात है कि सब प्रांतों में हाईस्कूल तक की मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम नहीं बनाया गया है और सबसे अधिक उपहासास्पद या शोकास्पद बात तो यह है कि बीसवीं सदी में भी इस देश में ऐसे माता-पिता और शिक्षक मौजूद हैं, जिनका विचार हैं कि हमारे लड़के और लड़कियों को अंग्रेजी-माध्यम द्वारा ही शिक्षा मिलनी चाहिए।"[2]

जिन परिस्थितियों का सामना बीसवीं सदी में भारतवासी कर रहे थे । जो एक चिंता का विषय था, आज इक्कीसवीं सदी में भी जमीनी रूप से हम कहीं न कहीं उस दुःख से दुखी हैं। एक ओर अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी का प्रचार-प्रसार हो रहा है। वहीं दूसरी ओर भारत के कुछ हिंदीतर व हिंदीतर राज्यों के विद्यालयों में हिंदी की स्थिति में जमीनी सुधार की आवश्यकता है। ओड़िशा जहाँ भारत की आबादी का ग्यारहवाँ हिस्सा ओड़िशा में बसा है। इस राज्य में 30 जिलों में से एक है- झारसुगुड़ा । जिसमें शोधकार्य के दौरान सुधार ही आवश्यकता दिखी है, जिसे हम परिचय के साथ बढ़ते हुए देखेंगे ।

---

[1]इंटरनेट द्वारा

[2]शिक्षा का माध्यम, श्रीमन्नारायण अग्रवाल, पद्मसिंह शर्मा (अनुवादक), 1945, आगरा: शिवलाल अग्रवाल एन्ड कं. लि. प्रकाशन, पृ-02 |

1.5. ओड़िशा (राज्य) का सामान्य परिचय

भौगोलिक स्थिति

भारत के दक्षिण-पूर्व-मध्य हिस्से में 1 अप्रैल 1936 को बिहार से अलग होकर ओड़िशा का एक अलग स्वतंत्र राज्य के रूप में अस्तित्व बना। ओड़िशा जिसे पहले उड़ीसा के नाम से जाना जाता था, इसके उत्तर में झारखंड, उत्तर-पूर्व में पश्चिम बंगाल, दक्षिण में आंध्रप्रदेश और पश्चिम में छत्तीसगढ़ तथा पूर्व में बंगाल की खाड़ी है।

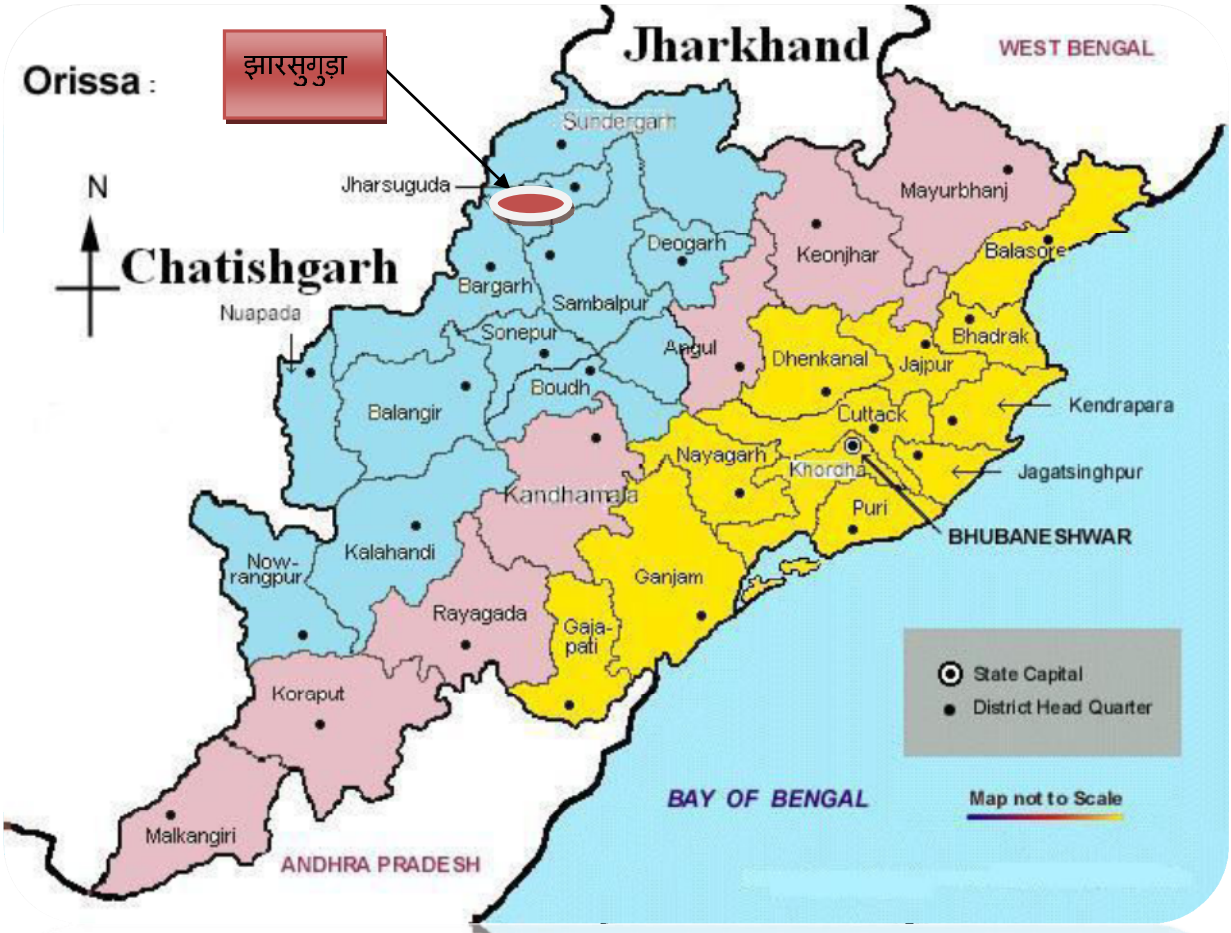

1.6. ओड़िशा की भाषाई स्थिति

इंडो यूरोपियन परिवार की इंडो आर्यन शाखा से ओड़िया भाषा बनी है। ओड़िशा में सामान्यत: लोग ओड़िया भाषा बोलते हैं। यह भाषा बंगाली और असमी भाषा के निकट है और कुछ आदिवासी जनजाति अभी भी द्रविड़ भाषा का प्रयोग करते हैं।

G. A. GRIERSON की पुस्तक "LINGUISTIC SURVEY OF INDIA", VOL V. INDO-ARYAN FAMILY (EASTERN GROUP) (Part II, Bihari & Oriya) में पृष्ठ संख्या- 367 में ओड़िया भाषा का परिचय इस प्रकार है –

" Oriya is the language of Orissa proper, and over which it is spoken is, roughly speaking, 82,000 square miles, and the number of people who speak it is, in round numbers nine millions."[1]

(ओड़िया भाषा ओड़िशा में बोली जाने वाली भाषा है। और मोटे तौर पर यह भाषा 82,000 वर्ग मील के क्षेत्र में बोली जाती है और इसे बोलने वाले लोगों की संख्या लाखों में है।)

1.7. ओड़िया वर्णमाला

"Alphabet- The order and number of the vowels and consonants are the same in oriya as the other Aryan language of India."[2]

(वर्णमाला - स्वर और व्यंजन की संख्या भारत के अन्य आर्य भाषा के समान ओड़िया में भी हैं।)

1.8. उच्चारण

"The pronunciation of the vowels is much the same as in Bengali."[3]

(ओड़िया भाषा में स्वरों का उच्चारण, बंगाली भाषा के साथ लगभग एकरूप है।)

[1] Linguistic survey of India (Vol V). G. A. Grierson. page - 367

[2] वही पुस्तक- पृष्ठ- 376

[3] वही पुस्तक- पृष्ठ- 378

1.9. ओड़िया और हिंदी

ENGLISH ALPHABET	ORIYA ALPHABET	हिंदी वर्णमाला	ENGLISH ALPHABET	ORIYA ALPHABET	हिंदी वर्णमाला
A	ଅ	अ	na	ଣ	ञ
A	ଆ	आ	ta	ତ	त
I	ଇ	इ	tha	ଥ	थ
Ee	ଈ	ई	da	ଦ	द
U	ଉ	उ	dha	ଧ	ध
Oo	ଊ	ऊ	na	ନ	न
Ru	ଋ	ऋ	pa	ପ	प
Roo	ଌ		pha(fa)	ଫ	फ
E	ଏ	ए	ba	ବ	ब
Ai	ଐ	ऐ	bha(va)	ଭ	भ
O	ଓ	ओ	ma	ମ	म
Ou	ଔ	औ	ya	ଯ,ୟ	य
Ka	କ	क	ra	ର	र
Kha	ଖ	ख	la	ଳ,ଲ	ल
Ga	ଗ	ग	wa	ୱ	व
Gha	ଘ	घ	sha	ଶ	श
Na	ଙ	ड.	sha	ଷ	ष
Cha	ଚ	च	sa	ସ	स
Chha	ଛ	छ	ha	ହ	ह
Ja	ଜ	ज	ksha	କ୍ଷ	क्ष
Jha	ଝ	झ			
Nya	ଞ	ण			
Ta	ଟ	ट			
Tha	ଠ	ठ			
Da	ଡ	ड			

1.10. झारसुगुड़ा एक परिचय

पश्चिम ओड़िशा में स्थित झारसुगुड़ा प्रारंभ में संबलपुर जिले का हिस्सा था। 01 अप्रैल 1994 को इसे एक स्वतंत्र जिला के रूप में गठित किया गया। आज यह एक समृद्ध औद्योगिक क्षेत्र है। यहाँ अवस्थित कारखानों में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लोग नौकरी करने आते है।

1.11. झारसुगुड़ा की भाषाई स्थिति

ओड़िशा की मुख्य भाषा 'ओड़िया' भाषा है। और प्रमुख बोलियों में से एक 'संबलपुरी'। पश्चिम ओड़िशा में 'संबलपुरी-बोली' बोली जाती है, और झारसुगुड़ा में भी मुख्य रूप से 'संबलपुरी-बोली' का प्रयोग किया जाता रहा है। समृद्ध औद्योगिक क्षेत्र बनने के साथ ही साथ झारसुगुड़ा की भाषा में भी समृद्धि देखी गई है, यहाँ भी भारत की सभी भाषा को बोलने वाले लोग रहते हैं और मुख्य रूप से 'हिंदी-भाषा' बोलने वाले।

1.12. झारसुगुड़ा के विद्यालयों में हिंदी शिक्षण

पूरे झारसुगुड़ा शहर में एक मात्र हिंदी विद्यालय है- 'सरस्वती शिशु विद्या मंदिर'। जहाँ हिंदी माध्यम से शिक्षा दी जाती है। अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में 'द्वितीय-भाषा' के रूप में और ओड़िया माध्यम विद्यालयों में 'तृतीय-भाषा' के रूप में हिंदी भाषा की शिक्षा दी जाती है। लेकिन विद्यार्थी जिस प्रकार की हिंदी सीख रहे हैं वह चिंता का विषय है। और हिंदी भाषा की शिक्षा देने वाले शिक्षकों के द्वारा दी जा रही शिक्षा; एक बहुत बड़े प्रश्नचिह्न को ला खड़ा करती है।

कई विद्यालयों में हिंदी भाषा शिक्षण की स्थिति इतनी बुरी है कि हिंदी शिक्षक के अभाव में व्यायाम विषय और संस्कृत पढ़ाने वाले शिक्षक हिंदी पढ़ा रहे हैं। जो ओड़िया भाषी हैं, जिन्हें स्वयं हिंदी का अच्छी तरह ज्ञान नहीं है।